'पाठशाला - आवश्यकता व उद्देश्य'

'पाठशाला' - संस्कार की राजधानी है। यह एक ऐसा बीजारोपण है जो यदि बच्चो को छोटी आयु से मिल जाए तो वह, न केवल स्वयं के लिए अपितु राज्य / देश / समाज / परिवार सबके लिए कार्य कारी होता है। इधर के संस्कार बच्चों को एक ऐसी समझ देते है जिससे वह .. न स्वयं कभी कुछ गलत करने का विचार करता है और न ही किसी अन्य को कुछ गलत करने देता है। उसका जीवन एक आदर्श जीवन होता है। फिर कोई भी परिस्थिति क्यो न आए, वह कभी हताश नही होता। कभी निराश नही होता। कभी Depression मे नही जाता। कभी आत्मघात का नही सोचता। कभी कोई गंदी सामग्री (अनुपसेव्य, नशाकारक आदि अभक्ष्य) का सेवन नही करता। कभी माता - पिता की उपेक्षा नही करता। कभी अपने कर्तव्य से नही भागता। कभी अपने स्वार्थ के लिए अन्य का बुरा नही करता। जो बच्चा पाठशाला जाता है उसे फिर कभी कोई अन्य हॉबी Class की आवश्यकता नही रहती।

जिस प्रकार आप बहुत अच्छी खीर बनाओ, सब कुछ डालो पर उसमे शक्कर नही डालोगे तो उस खीर का लाभ नही होगा। उसी प्रकार आप अपने बच्चों को सब कुछ सिखाओ - Schooling, Drawing, Dancing, Swiming Karate और जो भी हो सकता है, तो आप खीर तो बना रहे है परंतु उसमे मिठास के लिए यदि संस्कार ना दिए जाए, पाठशाला नही भेजा जाए तो उसका लाभ किसी को भी कोई लाभ होने वाला नही। मतलब, वह सब कुछ पढ लिख कर भी, छोटे दादा की भाषा मे कहे तो 'पढ़ा लिखा गवार' ही बनेगा। आदरणीय बडे पं. जी कहते है -

'संस्कार बिना की सुविधाए, पतन का कारण है'।

यह मात्र एक Quote नही, अपितु वास्तविकता है, Fact है। लोग ऐसा कहने लगते है कि - आपको तो पाठशाला की महिमा बताना है। इसलिए ऐसा सब कह रहे हो। जो ऐसा सोचते है उनसे हमारा कहना है कि अभी जो हमारे देश की हालत है,

Scanned with CamScanner

वह ऐसी क्यो है, उसका Reason क्या है?

- क्यो हमारे देश मे Suicide Rate, Rape जैसे निंदनीय कृत्य इतने High है?
- क्यो हमारा देश Nuclear Family Tradition इतना अधिक Prefer करने लगा है?
- क्यो Old Age Home, ज्यादा हो रहे है?
- क्यो Non-Veg Consumption ज्यादा बढ़ गया है?
- क्यो इतना Generation Gap आ गया है कि एक परिवार मे रहते हुए लोग अपनी बात Share नही कर पाते?

ऐसे अनेक प्रश्न उठते है और इन सब का एक मात्र यही कारण है कि हमने अपने बच्चो को सब कुछ देने का प्रयास तो किया है और करते है परंतु 'संस्कार' जहां से सबसे ज्यादा मिल सकते है, तो उनको उधर ही नही जाने दिया।

पाठशाला का एकमात्र उद्देश्य / Aim, बच्चो को सुसंस्कारित करना है। जैन धर्म के मूल व Basic सिद्धांतो को उनके कंठ और हृदय से बसाना है। अतः पाठशाला चलाना और भेजना दोनो ही अति आवश्यक है।

" पाठशाला एक सुंदर स्थान है, जहां सदाकाल प्रसन्नता का पाठ मिलता है। "

Scanned with CamScanner

पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं -

• बिना गुरु का जीवन, बिना Brake की गाड़ी है।

पहले के समय की यदि यहां बात की जाए तो पाठशाला / मंदिर जी मे पढ़ाने वाले अध्यापक, कोई Degree holder या कोई Extra ordinary नहीं होते है, वह तो कोई ऐसे गुरु होते थे जो अपने अनुभव से बच्चो को जीवन जीना सिखाते थे। वे स्वयं भी दिन भर ऐसे ही विचार रखते थे और ऐसे ही स्वाध्याय करते थे और अन्य को भी कराते थे। आप को जान कर आश्चर्य होगा कि पहले Mostly दादी जी लोग या कोई बड़े आयु वाले ही पढ़ाते थे, बहुत विचार करने पर समझ आया कि ऐसा क्यो होता था, क्योकि वह लोग मात्र पढ़ाने या याद कराने के उद्देश्य से नहीं पढ़ाते थे अपितु कैसे इस पाठो के साथ जीना है वह यह सिखाते थे।

वर्तमान काल मे हम ने Modernization के नाम पर इस बात का सम्पूर्णतया लोप कर दिया है। हम पाठशाला को भी School बनाना चाहते है। अनुभवी लोगो से लाभ लेते है ना ही यह समझ पाए है कि यह कोई School नहीं है। इधर हमे बच्चो मे Competition की भावनाएं, Competitive माहोल नहीं बनाना है बल्कि उन्हे Teamwork, सहजता सिखाना है।

एक अध्यापक की सबसे बड़ी विशेषता होनी चाहिए - Full devotion और स्वयं का अनुभव। पाठशाला के अध्यापक की विशेषताओं के निम्न बिंदु -

1. स्वयं पाठशाला का लाभ लिया हो क्योकि स्वयं अभ्यासी रहेगा तो ही औरो को ज्ञान / अभ्यास करा पाएगा।
2. पढ़ाई मे अच्छा हो या नहीं परन्तु जीवन मे अच्छा होना चाहिए क्योकि पाठशाला जीवन जीने की कला है।
3. बच्चों को उनकी मानसिकता को अच्छी तरह समझने वाला होना चाहिए। (It's a vast topic, can we discussed seperately)
4. स्वयं का आचरण, व्यवहार सबसे मधुर होना चाहिए।
5. स्वयं की ख्याति, लाभ या और कोई प्रलोभन वश, यह कार्य नहीं करना चाहिए। सबको साथ लेकर चलने की भावना होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

9 स्वंय विनय वान हो, स्वंय शीलवान हो। इस विषय पर बहुत विचार होना चाहिए।

" विशेषताएं के लिए कोई बुद्धि का प्रखर इतना नहीं, अपितु समझने वाला चाहिए। पाठशाला का अध्यापक एक वक्ता भी होता है, तो उसे मोक्षमार्ग प्रकाशक जी के वक्ता का स्वरूप अवश्य पढ़ना चाहिए।"

वर्तमान समय अनुसार, किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए? -

यह एक ऐसा विषय है जिस मे अनेकों मत भेद हो सकते है, परंतु मेरा मानना है कि कोई पद्धति, वर्तमान समय की अलग हो या ~~अभ्य~~ पहले या बाद की अलग, यह बात समझ से पार है। 2000 वर्ष पहले जो पद्धति मे कुंदकुंदाचार्य जी ने 'समयसार जी' लिखा, इसी पद्धति मे 1000 वर्ष बाद अमृतचंद्राचार्य जी ने 'आत्मख्याति' लिखि। या बात करे तो आदरणीय ~~छोटे~~ दादा जी ने जिस पद्धति मे पहले समझाते थे, आज भी उसही पद्धति मे समझाते है। और तो और आदरणीय छोटे बाबू भाई जिस पद्धति से पढाते थे आज भी उसी पद्धति से पढाते है। मतलब, हम Modernalisation के नाम पर सोचते है कि Online या PPT आदि का ही प्रयोग करना चाहिए, तो यह पूर्णतया सही नहीं लगती। आज भी हमारी नानी /दादी के मुंह से कहानी सुनना उतना ही अच्छा लगता है जितना पहिले लगता था।

मै यह नहीं कहना ~~चाहि~~ चाहती कि हम Technology का प्रयोग न करे, परंतु Technology को मात्र एक माध्यम/साधन ही रहने दे, और स्वंय की शैली को उदाहरण आदि के माध्यम से रोचक करने का प्रयत्न करे।

Online के नाम पर ऐसा न हो कि हम उनको/सबको, मंदिर से ही दूर कर दे या फिर जिनवाणी पठन/

Scanned with CamScanner

श्रवण आदि इतना सहज कर दे कि उसकी आदर और विनय ही चली जाए। इस विषय पर बहुत विचार होना चाहिए। technology use का मतलब है की रुचि इतनी अगाध हो कि प्रतिकूलता होने पर भी वह technology / online आदि के माध्यम से जिनवाणी पठन / श्रवण / स्वाध्याय में बाधा न हो। जिस किसी भी परिस्थिति में हो, फिर भी वह मंदिर जाने का मन बनाए।

ऐसा न हो कि online आदि माध्यम के चक्कर में खुद का घर / मंडल / समाज में तो सक्रिय, Devoted ना रहे सके परंतु दूसरो के घर / जगह सुधारने का ~~प्रयत्न~~ प्रयत्न ही करता रहे। जैन धर्म पूर्णतया Logical है, और इसकी पढ़ाई Full Logic से ही होती है, अतः हम ऐसी पद्धति का प्रयोग करे जिसमे हम धर्म से Science की सिद्धि करे न की Science से धर्म की। पद्धति ऐसी होनी चाहिए जिससे हम Update रहे, उदाहरणो में स्वयमानुयोग का प्रयोग करे, मात्र पढ़ाई नहीं करवाए परंतु उनको इस पाठशाला के माध्यम से देश / समाज / राज्य / घर / परिवार / साधर्मी आदि की Value बताए और Money Minded नहीं, अपितु Money नहीं होने पर भी कैसे जीवन सुख के साथ जीना है और जीवन के लक्ष्य / Aim का छोटे से ही ज्ञान कराएं i.e. कैसे भी रच / पच कर एक बार आत्मानुभव करे। ऐसी भावनाओ से ओत प्रोत उसका और अपना जीवन बनाएं।

'जय जिनेन्द्र'

NAME : ANUSHRI JAIN
PLACE : SURAT.
CONTACT No. : 8319649033.

Scanned with CamScanner